

千

古

绝

唱

历代绝笔诗词大观

张星魁 顾问 王建民 主审  
张学文 方振东 赵刚 评著

长征出版社

QIANGUJUECHANG

采薇歌

唐玄宗月夜江行

乌鹊歌二首

江行

易水歌

幽歌

临终诗

悲歌

塘上行

惜往日

挽歌

女引

思归引

# 千古绝唱

## ——历代绝笔诗词大观

张星魁 顾 炯 王建民 主编  
张学文 万振东 赵 明 序 著

北京学苑出版社

封面题字: 陈锡祥  
责任编辑:  
封面设计: 周小玮  
版式装帧:  
版式设计: 杜 晖  
责任校对: 张燕茹

### 图书在版编目(CIP)数据

千古绝唱: 历代绝笔诗词大观/张学文, 方振东, 赵刚  
评注. - 北京: 长征出版社, 2004

ISBN 7-80015-965-5

I. 千… II. ①张…②方…③赵… III. 古典诗  
诗歌-作品集-中国 IV. I222.7

中国版本图书馆 CIP 数据核字(2004)第 015351 号

长征出版社出版发行

(北京阜外大街 34 号 邮编: 100832)

电话: 68586781

三河市印务有限公司欣跃印刷 新华书店经销

2004 年 4 月第 1 版 2004 年 6 月第 2 次印刷

开本: 787 × 1092 毫米 1/16 20.125 印张

306 千字 印数: 3001 - 7000 册

定价: 29.80 元

---

ISBN 7-80015-965-5/I·230

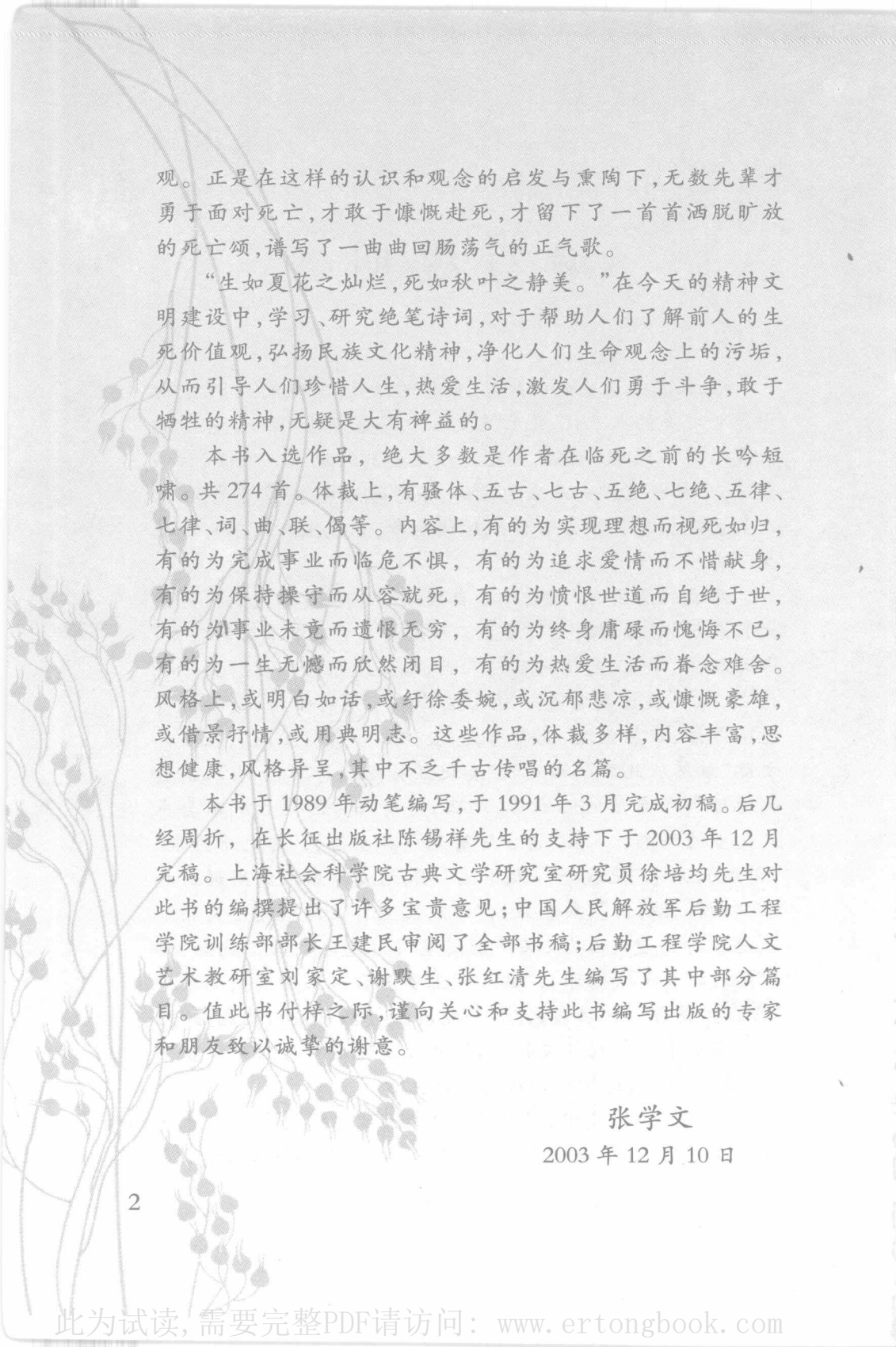
(本书如有印装错误, 我社负责调换)

## 编写说明

死亡,意味着生命的终结,肉体的毁灭。蝼蚁尚且贪生,对于万物之灵的人来说,死亡更是人所不愿的事。因此,东晋的王羲之就不同意那种把生死看作无差别的观点。他在《兰亭集序》中批评道:“一死生为虚诞,齐彭殤为妄作。”可是,不管人们主观上怎样千方百计地延续生命,客观上却又不可能长生不老。

死亡的原因有两种,一是自然死亡,“年增血气衰”(范成大),最后“形容稍歇灭”(缪袭),命赴黄泉。二是人为的死亡,即为理想、事业、爱情而自绝人世,或惨遭杀害。对待第一种死亡,只要认识到它是一种人生必不可免的归宿,只要活得光明磊落,坦然无愧,就会感到“去住本寻常”(王随),在临终之际“融然从此谢”(顾欢),“委化任冥纪”(符朗)。当人们透彻地理解了自然的死亡后,那么,对待人为的死亡就不会感到更多的恐惧。人生“自古皆有死”(林空斋),“终无千月命”(萧纲),如果“死我一人天下生”(朱元成);如果能用鲜血换来“世界文明价”(熊朝霖),“续成民主自由诗”(谢士炎);如果能和所钟爱的人“双双携手到鬼门”(扈氏),人们就会“哪管死的迟和早”(徐玮),“甘心直上断头台”(王幼安),就敢于“奋身饮枪弹”(何世昌),“长号赴洪流”(韩希孟),就能够“死一时实生千古”(周炳文)。人们还会通过这种死折射出整个人生的真相,启迪活着的人更好地生活。

在我们的民族中,早在先秦时期,对死亡的自然规律就有了理性的认识,就流行着“杀身成仁”、“舍生取义”的死亡



观。正是在这样的认识和观念的启发与熏陶下,无数先辈才勇于面对死亡,才敢于慷慨赴死,才留下了一首首洒脱旷放的死亡颂,谱写了一曲曲回肠荡气的正气歌。

“生如夏花之灿烂,死如秋叶之静美。”在今天的精神文明建设中,学习、研究绝笔诗词,对于帮助人们了解前人的生死价值观,弘扬民族文化精神,净化人们生命观念上的污垢,从而引导人们珍惜人生,热爱生活,激发人们勇于斗争,敢于牺牲的精神,无疑是大有裨益的。

本书入选作品,绝大多数是作者在临死之前的长吟短啸。共274首。体裁上,有骚体、五古、七古、五绝、七绝、五律、七律、词、曲、联、偈等。内容上,有的为实现理想而视死如归,有的为完成事业而临危不惧,有的为追求爱情而不惜献身,有的为保持操守而从容就死,有的为愤恨世道而自绝于世,有的为事业未竟而遗恨无穷,有的为终身庸碌而愧悔不已,有的为一生无憾而欣然闭目,有的为热爱生活而眷念难舍。风格上,或明白如话,或纤徐委婉,或沉郁悲凉,或慷慨豪雄,或借景抒情,或用典明志。这些作品,体裁多样,内容丰富,思想健康,风格异呈,其中不乏千古传唱的名篇。

本书于1989年动笔编写,于1991年3月完成初稿。后几经周折,在长征出版社陈锡祥先生的支持下于2003年12月完稿。上海社会科学院古典文学研究室研究员徐培均先生对此书的编撰提出了许多宝贵意见;中国人民解放军后勤工程学院训练部部长王建民审阅了全部书稿;后勤工程学院人文艺术教研室刘家定、谢默生、张红清先生编写了其中部分篇目。值此书付梓之际,谨向关心和支持此书编写出版的专家和朋友致以诚挚的谢意。

张学文

2003年12月10日

# 目 录



|        |       |    |
|--------|-------|----|
| 编写说明   | 张学文   | 1  |
| 采薇歌    | 伯夷 叔齐 | 1  |
| 思归引    | 卫 女   | 2  |
| 杞梁妻歌   | 杞梁妻   | 3  |
| 曳杖歌    | 孔 子   | 4  |
| 紫玉歌    | 紫 玉   | 5  |
| 贞女引    | 漆室女   | 6  |
| 乌鹊歌二首  | 何氏    | 7  |
| 惜往日    | 屈 原   | 8  |
| 易水歌    | 荆 柯   | 14 |
| 鸿鹄歌    | 刘 邦   | 15 |
| 垓下歌    | 项 羽   | 16 |
| 和《垓下歌》 | 虞 姬   | 17 |
| 石鼓歌    | 张丽英   | 18 |
| 幽歌     | 刘 友   | 19 |
| 绝命辞    | 息夫躬   | 20 |
| 临终诗    | 孔 融   | 22 |
| 悲歌     | 刘 辩   | 24 |
| 塘上行    | 甄皇后   | 25 |
| 挽歌     | 缪 袭   | 26 |

|                        |     |    |
|------------------------|-----|----|
| 幽愤诗                    | 嵇 康 | 27 |
| 出征诗                    | 周 处 | 33 |
| 挽歌诗                    | 陆 机 | 34 |
| 临终诗                    | 欧阳建 | 36 |
| 重赠卢湛                   | 刘 琨 | 39 |
| 临终诗                    | 苻 朗 | 41 |
| 挽歌诗                    | 陶渊明 | 43 |
| 临终诗                    | 谢灵运 | 44 |
| 续世基诗                   | 谢 晦 | 46 |
| 临刑诗                    | 谢世基 | 47 |
| 临终诗                    | 范 晔 | 48 |
| 华山畿                    | 宋 女 | 49 |
| 代挽歌                    | 鲍 照 | 50 |
| 临终诗                    | 吴迈远 | 51 |
| 临终诗                    | 顾 欢 | 52 |
| 被幽述志诗                  | 萧 纲 | 54 |
| 临终诗                    | 元子攸 | 55 |
| 幽逼诗                    | 萧 绎 | 56 |
| 悲永殡                    | 释灵裕 | 57 |
| 赠薛播州诗                  | 杨 素 | 58 |
| 自感                     | 侯夫人 | 59 |
| 临终诗                    | 释智命 | 60 |
| 释疾歌                    | 卢照邻 | 60 |
| 送刑桂州                   | 王 维 | 61 |
| 临路歌                    | 李 白 | 63 |
| 守睢阳                    | 张 巡 | 64 |
| 风疾舟中伏枕书怀三十六韵奉<br>呈湖南亲友 | 杜 甫 | 65 |
| 客舍悲秋有怀两省               | 岑 参 | 71 |
| 南溪始泛                   | 韩 愈 | 72 |
| 偶然作                    | 吕 温 | 74 |
| 自传诗                    | 刘禹锡 | 75 |
| 自咏老身示诸家属               | 白居易 | 76 |

|                                            |     |     |
|--------------------------------------------|-----|-----|
| 寄欧阳詹                                       | 太原妓 | 77  |
| 留别吉州太守宗人迈                                  | 滕 倪 | 78  |
| 留海曹师等诗                                     | 杜 牧 | 79  |
| 锦瑟                                         | 李商隐 | 80  |
| 浪淘沙                                        | 李 煜 | 82  |
| 临终诗                                        | 谢 泌 | 83  |
| 自作寿堂因书一绝以志之                                | 林 逋 | 83  |
| 临终作                                        | 袁 陟 | 85  |
| 临终诗                                        | 王 随 | 86  |
| 绝笔诗                                        | 王处厚 | 86  |
| 李士元学士守临邛日有谷一<br>茎九穗者数本芝数本莲花<br>莲叶并蒂者各一本因赋之 | 梅尧臣 | 87  |
| 绝句                                         | 欧阳修 | 89  |
| 临终诗                                        | 邵 雍 | 90  |
| 绝命词                                        | 萧观音 | 91  |
| 临终口占                                       | 郑 侠 | 93  |
| 西江月                                        | 蔡 京 | 94  |
| 挽词                                         | 秦 观 | 95  |
| 洞仙歌                                        | 晁补之 | 97  |
| 茶瓶儿                                        | 李元膺 | 98  |
| 寄申纯二首                                      | 王莹卿 | 99  |
| 忆瑶姬                                        | 申 纯 | 100 |
| 梅花诗                                        | 李少云 | 101 |
| 孤燕诗                                        | 王 氏 | 102 |
| 洞仙歌                                        | 朱敦儒 | 103 |
| 燕山亭                                        | 赵 佶 | 105 |
| 夜行船                                        | 倪君奭 | 106 |
| 哀辞                                         | 滕茂实 | 107 |
| 海陵病中                                       | 吕本中 | 110 |
| 减字木兰花                                      | 向子湮 | 111 |
| 微雨中赏月桂独酌                                   | 陈与义 | 112 |
| 衣襟中诗                                       | 李若水 | 113 |
| 示儿                                         | 陆 游 | 114 |
| 临终诗                                        | 陆凝之 | 115 |

|          |      |     |
|----------|------|-----|
| 梦觉作      | 范成大  | 115 |
| 落花       | 杨万里  | 117 |
| 洞仙歌      | 辛弃疾  | 118 |
| 绝笔诗      | 韩 漉  | 119 |
| 献帅府经历    | 李伸之  | 120 |
| 碎花笺      | 戴复古妻 | 121 |
| 绝命词      | 卢 氏  | 122 |
| 初到建宁赋诗一首 | 谢枋得  | 123 |
| 衣带赞      | 文天祥  | 124 |
| 练裙带诗     | 韩希孟  | 125 |
| 袖中遗诗     | 朱 氏  | 127 |
| 满庭芳      | 徐君宝妻 | 127 |
| 辞庙诗      | 赵 淮  | 129 |
| 绝命诗      | 赵卯发  | 130 |
| 海口       | 皇甫明子 | 131 |
| 壁上血诗     | 林空斋  | 132 |
| 绝笔诗      | 邓得遇  | 133 |
| 绝命辞      | 王士敏  | 134 |
| 血帛诗      | 刘士昭  | 135 |
| 题青枫岭石    | 王贞妇  | 135 |
| 刺血诗      | 李芳树  | 136 |
| 踏莎行      | 贾云华  | 138 |
| 咏喜雨      | 张养浩  | 139 |
| 辞世诗      | 贯云石  | 141 |
| 裂帛诗      | 何 氏  | 142 |
| 赋庭柏      | 刘 宜  | 143 |
| 题壁       | 蔺 氏  | 143 |
| 答金定      | 刘翠翠  | 144 |
| 绝笔诗      | 宋 濂  | 146 |
| 临刑口占     | 孙 蕡  | 147 |
| 绝命辞      | 方孝儒  | 147 |
| 自赞       | 曾 槩  | 149 |
| 临终诗      | 薛 瑄  | 150 |

|           |     |     |
|-----------|-----|-----|
| 辞世诗       | 于 谦 | 150 |
| 临终诗       | 陈献章 | 152 |
| 悼亡诗       | 薄少君 | 153 |
| 满庭芳       | 王琼奴 | 153 |
| 绝命诗       | 王娇鸾 | 155 |
| 绝笔诗       | 唐 寅 | 156 |
| 永诀李张唐三公   | 杨 慎 | 157 |
| 就义诗       | 杨继盛 | 158 |
| 寄木生       | 田娟娟 | 159 |
| 系中八绝(选一)  | 李 贽 | 160 |
| 忽忽吟       | 汤显祖 | 161 |
| 临刑诗       | 吴贞毓 | 162 |
| 绝命诗       | 刘宗周 | 163 |
| 狱中被害日作    | 黄尊素 | 164 |
| 临刑口占      | 袁崇焕 | 165 |
| 绝命词       | 张锡眉 | 166 |
| 绝命歌       | 傅日炯 | 167 |
| 衣襟血诗      | 黄道周 | 168 |
| 题狱壁       | 闻大成 | 169 |
| 题壁诗       | 陈邦彦 | 170 |
| 十七日临难赋绝命词 | 瞿式耜 | 171 |
| 就杀吟       | 张同敞 | 171 |
| 绝命诗       | 何腾蛟 | 173 |
| 燕子矶口占     | 史可法 | 174 |
| 沁园春       | 左懋第 | 175 |
| 自题小像      | 堵胤锡 | 177 |
| 临终偈语      | 茆溪森 | 178 |
| 就义前题联     | 阎应元 | 179 |
| 题案诗       | 赵天生 | 180 |
| 绝命词       | 金圣叹 | 181 |
| 贺新郎       | 吴伟业 | 182 |
| 自挽        | 张尔岐 | 184 |
| 癸丑元日      | 归 庄 | 185 |

|               |      |     |
|---------------|------|-----|
| 酬李子德二十四韵      | 顾炎武  | 186 |
| 绝笔诗           | 洞庭烈女 | 189 |
| 无题            | 小 青  | 190 |
| 绝命诗           | 王 翊  | 191 |
| 绝命诗           | 张煌言  | 192 |
| 绝命词           | 范承谟  | 193 |
| 别云间           | 夏完淳  | 194 |
| 薄命词           | 邵梅宜  | 195 |
| 殉情诗           | 曾如兰  | 196 |
| 除夕            | 蒲松龄  | 197 |
| 临终绝句          | 李 埏  | 198 |
| 临终诗           | 姚栖霞  | 199 |
| 哭夫            | 施婉贞  | 199 |
| 病中与郭频伽秀才邓尉探梅  | 徐 涛  | 200 |
| 狱中寄女诗         | 王谋文  | 201 |
| 绝命词           | 陈彩玉  | 202 |
| 衣带诗           | 扈 氏  | 203 |
| 咏残荷           | 孔氏女  | 204 |
| 病剧作绝命词留别诸故人   | 袁 枚  | 205 |
| 绝命诗           | 汤贻汾  | 206 |
| 垂死寄夫          | 颜 玉  | 207 |
| 赴戍登程口占示家人     | 林则徐  | 209 |
| 绝命诗           | 吴可读  | 210 |
| 绝命诗           | 洪仁玕  | 211 |
| 临终前口占         | 翁同龢  | 212 |
| 病中记梦述寄梁任父(节选) | 黄遵宪  | 213 |
| 客京都法源寺有感      | 释敬安  | 215 |
| 鹧鸪天           | 朱孝臧  | 216 |
| 谒明孝陵          | 丘逢甲  | 217 |
| 临终语           | 谭嗣同  | 219 |
| 绝命诗           | 白毓昆  | 220 |
| 武昌狱中有感        | 宁调元  | 221 |
| 诀别            | 廖仲恺  | 222 |

|             |        |     |
|-------------|--------|-----|
| 绝命诗         | 朱元成    | 223 |
| 致徐小淑绝命词     | 秋瑾     | 224 |
| 绝命诗         | 仇亮     | 225 |
| 辞世歌         | 于右任    | 227 |
| 自挽诗         | 钟明光    | 228 |
| 洒血诗         | 吴旻谷    | 229 |
| 绝命词         | 罗福星    | 230 |
| 绝命词         | 邹容 章太炎 | 230 |
| 拟决绝词        | 周实     | 232 |
| 九十初度        | 董必武    | 233 |
| 喜读主席词二首(选一) | 朱德     | 234 |
| 无题诗         | 黄之萌    | 236 |
| 绝命诗         | 熊朝霖    | 237 |
| 自挽联         | 周炳文    | 238 |
| 绝命诗         | 续范亭    | 239 |
| 自挽联         | 熊亨瀚    | 240 |
| 狱中诗         | 恽代英    | 241 |
| 就义诗         | 吉鸿昌    | 242 |
| 狱中诗         | 朱克靖    | 243 |
| 狱中诗         | 黎又霖    | 244 |
| 自挽联         | 周树屏    | 244 |
| 绝笔诗(二首)     | 贺锦斋    | 245 |
| 死前一夕作示狱友    | 杨匏安    | 246 |
| 自挽联         | 王步文    | 247 |
| 就义诗         | 李甲祜    | 248 |
| 就义诗         | 尹澍涛    | 249 |
| 就义词         | 李鸣珂    | 249 |
| 偶成          | 瞿秋白    | 251 |
| 诗一首         | 方志敏    | 252 |
| 就义诗         | 夏明翰    | 253 |
| 无题          | 陈佑魁    | 254 |
| 就义诗         | 王幼安    | 255 |
| 题壁诗         | 汪石冥    | 255 |

|          |     |     |
|----------|-----|-----|
| 就义诗      | 陈龙骧 | 256 |
| 狱中夜月     | 刘伯坚 | 257 |
| 狱中题壁诗    | 王达强 | 258 |
| 绝命诗      | 蓝飞鹤 | 260 |
| 狱中       | 龙大道 | 261 |
| 诀别       | 邓恩铭 | 261 |
| 梅岭三章     | 陈 毅 | 262 |
| 绝命诗      | 罗亦农 | 264 |
| 被捕       | 陈逸群 | 265 |
| 就义诗      | 唐士谦 | 266 |
| 绝命诗      | 邓雅声 | 267 |
| 告子女      | 罗荣桓 | 267 |
| 读《灰色马》   | 徐 玮 | 268 |
| 绝命词      | 王孝锡 | 269 |
| 临刑诗      | 赵天鹏 | 271 |
| 狱中诗      | 柳志杰 | 271 |
| 狱中诗      | 王白与 | 272 |
| 就义诗      | 杨 超 | 273 |
| 就义诗      | 朱也赤 | 274 |
| 对江娥      | 黄接舆 | 275 |
| 怀秋子      | 张 胆 | 276 |
| 临难前诗     | 罗世文 | 277 |
| 春风拂拂地吹来  | 谢铁民 | 278 |
| 绝笔诗      | 周文雍 | 279 |
| 绝命词      | 何世昌 | 280 |
| 绝笔词      | 陈洪涛 | 281 |
| 狱中诗      | 赵一曼 | 282 |
| 新正气歌     | 萧次瞻 | 283 |
| 就义诗      | 黄冠群 | 284 |
| 绝命词      | 王泰吉 | 285 |
| 火        | 高文华 | 286 |
| 狱中勉诸儿    | 林正良 | 287 |
| 题《毛泽东选集》 | 许光达 | 288 |

|                    |      |     |
|--------------------|------|-----|
| 祝第四次全国文联<br>代表大会召开 | 周立波  | 289 |
| 狱中遗诗               | 吕大千  | 290 |
| 狱中诗                | 谢士炎  | 291 |
| 合唱                 | 林  青 | 292 |
| 偶成                 | 何其芳  | 293 |
| 就义诗(三首)            | 张锦辉  | 294 |
| 狱中歌声               | 何功伟  | 295 |
| 就义词                | 雷开元  | 297 |
| 墙上遗诗               | 无名烈士 | 298 |
| 就义诗                | 陈法轼  | 299 |
| 铁窗明月有感             | 余文涵  | 300 |
| 临刑前的遗曲             | 王干成  | 300 |
| 留取丹心照汗青            | 吕惠生  | 302 |
| 示儿                 | 蓝蒂裕  | 303 |
| 就义诗                | 刘国铤  | 304 |
| 斗癌魔                | 李克忠  | 305 |
| 血诗                 | 金方昌  | 306 |
| 我的“自白书”            | 陈  然 | 307 |
| 迎新                 | 张志新  | 308 |

## 采薇歌

伯夷 叔齐<sup>①</sup>

登彼西山兮<sup>②</sup>，采其薇矣<sup>③</sup>。  
以暴易暴兮<sup>④</sup>，不知其非矣<sup>⑤</sup>。  
神农虞夏忽焉没兮<sup>⑥</sup>，我安适归矣<sup>⑦</sup>？  
于嗟徂兮<sup>⑧</sup>，命之衰矣<sup>⑨</sup>。

### 注 释：

① 伯夷 叔齐（生卒年不详）：商末孤竹国君的两个儿子。伯夷名允，字公信；叔齐名致，字公述。孤竹君立叔齐为继承人，孤竹君死后，叔齐让位伯夷，伯夷不受逃走，叔齐也跟着逃走，一同奔周。武王伐纣，二人拦马谏阻。商亡，耻食周粟，终致饿死。

② 西山：即首阳山，又名雷首山，在今山西永济县南。

③ 薇：植物名，也叫蕨菜，根含淀粉，可供食用或酿造。

④ 以暴易暴：意为周武王以暴虐替代了商纣王的暴虐。

⑤ 不知其非：武王还不知道自己的过错。

⑥ “神农”句：神农即传说中的炎帝。虞，即大舜。夏，朝代名，指夏朝开国君主大禹。忽，绝灭。全句意为古代帝王禅让的风气已经灭绝，现在是以暴力争夺了。

⑦ 安适归：归往哪里合适？

⑧ 于嗟：叹词。

⑨ 命之衰：生命垂危。

## 评析：

伯夷叔齐听说周文王“善养老”，前去投奔。后来武王伐纣，他们认为武王无道，周少仁德，与其同流合污，不如避之以保清白，于是义不食周粟，隐于首阳山以采薇为生。二人快要饿死时，作了这首歌辞。诗中感世风日下，叹命运衰薄，诅咒暴虐统治，感伤不遇明主，格调悲凉，情怀幽怨。

## 思归引

卫女<sup>①</sup>

涓涓泉水<sup>②</sup>，流及于淇兮<sup>③</sup>。

有怀于卫，靡日不思<sup>④</sup>。

执节不移兮行不隳<sup>⑤</sup>，

矜轲何辜兮离厥菑<sup>⑥</sup>。

嗟乎何辜兮离厥菑。

## 注 释：

① 卫女：春秋时卫国国君的女儿。

② 涓涓：水流缓慢的样子。

③ 淇：淇水，在今河南北部，古属卫国。

④ 靡日：无日。

⑤ 执节：坚守节操。行：行为。隳：毁坏。

⑥ 矜轲：通“坎坷”。离：遭逢。厥菑、菑：“灾”的异体字。厥菑，这样的灾害。

## 评 析：

相传春秋时卫侯有女，十分贤惠，邵王听说，便派人聘娶，可她人还未到邵王就死了。邵王的太子想把她留在自己身边，她坚决不从，被幽禁深宫。她思归不得，弹琴唱了这首歌，随即上吊自杀。诗中巧用比兴，表现了主人公思归不得的痛苦之情和执节不移的坚定操守。

## 杞梁妻歌

杞梁妻<sup>①</sup>

乐莫乐兮新相知<sup>②</sup>，

悲莫悲兮生别离<sup>③</sup>。

哀感皇天兮城为隳<sup>④</sup>。

## 注 释：

① 杞梁妻（前 550 年）：姓姜，字孟，春秋时齐国大夫杞梁（名殖）之妻。

② 乐莫乐：乐没有比……更乐。相知：相互结成的知己。

③ 生别离：生生别离。

④ 哀感：哀伤感动。皇天：对天的尊称。城：指莒城，即今山东莒县。